UNIVERSITY OF JAMMU

जम्मू युनिवर्सिटी पोस्ट

उत्कृष्ट भविष्य की ओर अग्रसर

UNIVERSITY OF JAMMU

दिसंबर 2025 | जम्मू | वर्ष: 2 | अंक 4

जम्मू विश्वविद्यालय ने देशभक्ति के जोश और राष्ट्र-निर्माण की महत्वाकांक्षी दृष्टि के साथ 79वें स्वतंत्रता दिवस को मनाया

हिमानी/ अलंकृत

जम्मू: जम्मू विश्वविद्यालय ने भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस को देशभक्ति के जोश और भविष्योन्मुखी महत्वाकांक्षा के मिश्रण के साथ मनाया। कुलपति प्रो. उमेश राय ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और शैक्षणिक उत्कृष्टता तथा राष्ट्रीय विकास में योगदान के लिए प्रेरणादायक रोडमैप प्रस्तुत किया।

15 अगस्त को जम्मू परिसर में राष्ट्रीय गान की लयबद्ध धुनों के बीच यह समारोह स्वतंत्रता और एकता की भावना को जीवंत कर गया। प्रो. राय ने छात्रों, शिक्षकों, कर्मचारियों और अतिथियों को संबोधित करते हुए राष्ट्र की संप्रभुता, समानता और समावेशिता के लिए किए गए गहन बलिदानों पर विचार व्यक्त किया। उन्होंने कहा, ये कठिन परिश्रम से प्राप्त खजाने हैं, जिन्हें हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के सर्वोच्च बलिदानों और हमारी सशस्त्र सेनाओं की अटूट प्रतिबद्धता द्वारा सुरक्षित रखा गया है।

इस अवसर पर, जो महर्षि अरबिंदो की जयंती के साथ भी मेल खाता था, कुलपति ने दार्शनिक और क्रांतिकारी के भारत के स्वतंत्रता संग्राम तथा बौद्धिक विचारधारा में अमर योगदान को श्रद्धांजलि अर्पित की।

शिक्षा को राष्ट्र-निर्माण से सीधे जोड़ते हुए

प्रो. राय ने जोर दिया कि उच्च शिक्षा संस्थानों को शैक्षणिक प्रयासों को वास्तविक दुनिया की सामाजिक और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं से जोड़ना चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रयासों को प्रधानमंत्री की 'विकसित भारत @ 2047' की महत्वाकांक्षी दृष्टि से जोड़ा और नवाचार, आविष्कार तथा प्रभावशाली अनुसंधान के माध्यम से भारत की प्रगति को गति देने की आवश्यकता पर बल दिया।

जम्मू विश्वविद्यालय की हालिया उपलब्धियों को उजागर करते हुए प्रो. राय ने गर्व से बताया कि यह जम्मू-कश्मीर का पहला संस्थान है जिसने NAAC A++ ग्रेड प्राप्त किया है, जिसमें CGPA 3.72 है। विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (NIRF) में समग्र रूप से 50वां स्थान और राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में 23वां स्थान हासिल किया है—ये भारतीय उच्च शिक्षा में इसकी बढ़ती प्रतिष्ठा के प्रमाण हैं।

अनुसंधान की गति इस प्रगति का प्रमुख चालक रही है। विश्वविद्यालय ने अपना पहला अनुसंधान नीति लागू की, IIT दिल्ली के साथ प्रतिष्ठित ANRF-PAIR कार्यक्रम के तहत स्पोक संस्थान के रूप में चयनित हुआ, और लगभग ₹23 करोड़ की कुल राशि वाले 52 अनुसंधान परियोजनाएं प्राप्त कीं। इसके अलावा, उभरते अनुसंधान प्रतिभा को पोषित करने के लिए ₹13 लाख के 14 सीड ग्रांट स्वीकृत किए गए।

शैक्षणिक क्षेत्र में नए प्रयास छात्रों के लिए अवसरों का विस्तार कर रहे हैं। फिजिकल एजुकेशन एंड रूरल स्टडीज, तथा जर्नलिज्म एंड मीडिया स्टडीज में नए Ph.D. कार्यक्रम घोषित किए गए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के अनुरूप, कठुआ परिसर में BCA में डेटा साइंस को प्रमुख विषय के रूप में शामिल करते हुए BCA और BBA में चार वर्षीय एकीकृत स्नातक कार्यक्रम (FYUGP) शुरू किए गए। अन्य नवाचारी पेशकशों में लचीला 'डिजाइन योर डिग्री' कार्यक्रम और गणितीय विज्ञान तथा इलेक्ट्रॉनिक्स में पांच वर्षीय एकीकृत रू.स्र्. कार्यक्रम शामिल हैं।

वैश्विक और उद्योग भागीदारी पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत कर रही हैं, जिसमें GHV Accelerator, यूनिवर्सिटी ऑफ एबरडीन (यूके), एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड, ब्लू प्लैनेट एनवायरनमेंटल सॉल्यूशंस, और यूनिवर्सिटी ऑफ लाइफ (MSME) के साथ हाल ही में रूस्न हस्ताक्षरित किए गए हैं, जो अनुसंधान, उद्यमिता और सतत विकास को बढ़ावा दे रहे हैं।

शेष पृष्ठ 2 पर

कल्चरल बोनान्जा ने रोशन किया जेयू परिसर: तीन दिवसीय इंडक्शन प्रोग्राम रचनात्मकता और एकता के उच्च स्वर पर समाप्त हुआ

सुहैल/ शुभम

जम्मू: जम्मू विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय इंडक्शन प्रोग्राम भव्य रूप से समाप्त हुआ, जिसमें उत्साह ङ्क द क्लब्स कंसोर्टियम द्वारा आयोजित ग्रैंड कल्चरल बोनान्जा ने परिसर को रचनात्मकता, लय और युवा ऊर्जा का जीवंत केंद्र बना दिया।

आइकॉनिक जनरल जोरावर सिंह ऑडिटोरियम में आयोजित समापन समारोह छात्र प्रतिभा, सांस्कृतिक विविधता और सहयोगी भावना का चमकदार उत्सव बन गया। ऑडिटोरियम ऊर्जावान नृत्य क्रमों, आत्मीय संगीतमय प्रस्तुतियों, मनमोहक नाटकीय स्किट्स, काव्यात्मक अभिव्यक्तियों और प्रभावशाली दृश्य कला प्रदर्शनों की विविध श्रृंखला से जीवंत हो उठा—जिसने नए छात्रों को विश्वविद्यालय के समृद्ध सह-पाठ्यचर्या पारिस्थितिकी तंत्र का रोमांचक पहला अनुभव प्रदान किया।

जो नए छात्रों के लिए एक ओरिएंटेशन के रूप में शुरू हुआ, वह जल्द ही परिसर

जीवन के कक्षाओं से कहीं आगे तक फैलने की शक्तिशाली प्रदर्शनी में बदल गया। उत्साह के माध्यम से, जो विश्वविद्यालय के गतिशील छात्र क्लबों का छत्र संस्थान है, प्रतिभागियों ने आत्म-अभिव्यक्ति, नवाचार और समुदाय निर्माण की असीम संभावनाओं को प्रदर्शित किया।

माननीय कुलपति प्रो. उमेश राय, जो मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, ने युवा दर्शकों के साथ गहराई से जुड़ने वाला प्रेरणादायक संबोधन दिया। क्लबों को 'एकता, रचनात्मकता और व्यक्तिगत विकास की शक्तिशाली शक्ति' बताते हुए उन्होंने साइलो तोड़ने और क्षितिज विस्तार में उनकी भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने कहा, 'क्लब सीमाएं खींचने के बारे में

शेष पृष्ठ 2 पर

स्वतंत्रता की ओर मुफ्त सवारी: जम्मू की ई-बसें महिलाओं को कैसे सशक्त बना रही हैं

चेतना कौल

जम्मू: जम्मू में हर सुबह शुरुआत होती है गतिविधि से—शटर उठते हैं, स्कूल बैग झूलते हैं, और महिलाएं अपने दिन में कदम रखती हैं। इन रोजमर्रा के नजारे में एक शांत लेकिन गहरा बदलाव सबसे अलग दिखता है: महिलाएं बिना किसी झिझक, आत्मविश्वास और सम्मान के साथ इलेक्ट्रिक बसों में चढ़ रही हैं—बिना सिक्के गिनने या किराए की चिंता किए।

शहर की कई महिलाओं के लिए ई-बस अब सिर्फ सार्वजनिक परिवहन नहीं रही, बल्कि यह पहियों पर सवार स्वतंत्रता बन गई है।

जगती से नागरोटा और पंजग्राइये के रास्ते रोजाना यात्रा करने वाली एक विश्वविद्यालय छात्रा कहती है कि मुफ्त सवारी ने उसकी दिनचर्या और सोच दोनों को बदल दिया है। 'पहले बस किराए पर खर्च करने से पहले मुझे दो बार सोचना पड़ता था। अब वह पैसा मैं किताबों और पढ़ाई के लिए बचा लेती हूं,' वह कहती हैं। जो पहले आर्थिक बोझ लगता था, अब राहत और आत्मविश्वास का स्रोत बन गया है।

जम्मू के बस स्टॉपों पर ऐसी ही कहानियां

चुपचाप सामने आती हैं। कॉलेज की लड़कियां परीक्षाओं और सपनों पर बात करती हैं। नौकरी करने वाली महिलाएं फाइलें थामे दिन की तैयारी करती हैं। एक बुजुर्ग महिला दुपट्टा संभालकर बस में चढ़ती हैं। और हर सुबह एक परिचित चेहरा आता है—वर्दी में एक महिला पुलिसकर्मी, उसी समय उसी बस में सवार होती हैं।

कामकाजी महिलाओं के लिए मुफ्त ई-बस सेवा का मतलब है सम्मान और स्वतंत्रता। अब कई महिलाओं को लंबी पैदल दूरी तय नहीं करनी पड़ती या महंगे ऑटो पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। छात्राओं के लिए इसका मतलब है नियमित उपस्थिति, जेब खर्च की बचत और छोटी-छोटी

शेष पृष्ठ 2 पर

लाइब्रेरीज़ का भविष्य सुरक्षित है क्योंकि उनकी मूल भूमिका विकसित होती रहती है: डॉ. विक्रम सिंह साही

पारुल/हिमानी

जेयू पोस्टः सर, जेयू पोस्ट के साथ समय देने के लिए धन्यवाद। सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग से लेकर विश्वविद्यालय के प्रमुख ज्ञान केंद्रों में से एक के नेतृत्व तक का आपका सफर उल्लेखनीय रहा है। क्या आप हमें बता सकते हैं कि आप लाइब्रेरियनशिप में कैसे आए?

डॉ. विक्रम सिंह साहीः मुझे यहां बुलाने के लिए धन्यवाद। मेरा सफर काफी असामान्य रहा है। कंप्यूटर एप्लिकेशन्स में मास्टर्स पूरा करने के बाद, मैं अहमदाबाद में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में काम करता था। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण मुझे घर वापस आना पड़ा, और मैं जीजीएम साइंस कॉलेज में लेक्चरर के रूप में शामिल हो गया। जब 1999 में जम्मू विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में शामिल होने का अवसर मिला, तो यह एक सोचा-समझा फैसला था।

पहले दिन ही, किताबों, जानकारी और ज्ञान से घिरा हुआ देखकर मुझे एहसास हुआ, ÷मैं सही जगह पर हूं÷ कभी-कभी आप नौकरी में शामिल होते हैं, और धीरे-धीरे उसमें विकसित हो जाते हैं। ठीक वैसा ही मेरे साथ हुआ। 1999 से अब तक मेरी पूरी सेवा इसी लाइब्रेरी को समर्पित रही है। वर्षों में मेरी रुचि और गहरी हुई—मैंने लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस में बैचलर और मास्टर्स किया, साथ ही निरंतर अकादमिक और प्रोफेशनल विकास जारी रखा। आज इन-चार्ज लाइब्रेरियन के रूप में मेरा उद्देश्य लाइब्रेरी को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना और इसे ऐसे स्तर पर ले जाना है जहां हर कोई इसके संसाधनों और सेवाओं के बारे में जानता हो।

जेयू पोस्टः दशकों में लाइब्रेरीज़ में जबरदस्त बदलाव आया है। आप उनकी विकास यात्रा को कैसे देखते हैं, और डिजिटल युग में वे क्यों प्रासंगिक बनी हुई हैं?

डॉ. विक्रम सिंह साहीः लाइब्रेरी एक बढ़ता हुआ जीव है—वे समय के साथ अनुकूलित होती हैं। हम पांडुलिपियों से कागज और प्रिंटिंग तकनीक के आविष्कार के बाद मुद्रित किताबों तक पहुंचे। अब अधिकांश सामग्री डिजिटल है।

लाइब्रेरीज़ का भविष्य सुरक्षित है क्योंकि उनकी मूल भूमिका गायब नहीं होती, बल्कि विकसित होती है। जम्मू विश्वविद्यालय में हमारी लाइब्रेरी प्रणाली विभागों और ऑफ-साइट कैंपसों को डिजिटल पहुंच से जोड़ती है, जिससे उपयोगकर्ता कभी भी, कहीं भी संसाधनों तक पहुंच सकते हैं। पहले सफलता को भौतिक रूप से आने वाले लोगों की संख्या से मापा जाता था। आज वर्चुअल विजिट उतने ही—या उससे अधिक—महत्वपूर्ण हैं। सवाल अब फुटफॉल का नहीं, पहुंच और पहुंचने की क्षमता का है। हम अलग तरीके से काम करने की कोशिश कर रहे हैंः लाइब्रेरी को उपयोगकर्ता तक पहुंचना चाहिए, न कि उपयोगकर्ता को लाइब्रेरी तक आना चाहिए।

जेयू पोस्टः धन्वंतरी लाइब्रेरी ने छात्रों और शोधकर्ताओं की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए कौन-सी नवाचारी सेवाएं शुरू की हैं?

डॉ. विक्रम सिंह साहीः हमने व्यावहारिक, उपयोगकर्ता-केंद्रित नवाचारों पर ध्यान केंद्रित किया है। एक प्रमुख पहल हमारी दैनिक समाचार पत्र संपादकीय सेवा है, जहां हम कई समाचार पत्रों से संपादकीय संकलित करके प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्रों के साथ साझा करते हैं। यह सिविल सर्विसेज, बैंकिंग या अन्य प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी करने वालों के लिए विशेष रूप से उपयोगी साबित हुई है। हमने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, वर्चुअल संचार चैनलों और डिजिटल टूल्स के माध्यम से सूचना सेवाओं का विस्तार किया है। जोर संसाधनों को अधिक सुलभ बनाने पर है, चाहे उपयोगकर्ता कैंपस पर हों या ऑफ-साइट। हमारा लक्ष्य आधुनिक जीवनशैली के अनुरूप अकादमिक सफलता का समर्थन करना है।

जेयू पोस्टः शोध में काफी बदलाव आया है। आज लाइब्रेरी शोधकर्ताओं का कैसे समर्थन करती है, खासकर पिछले कार्यों तक पहुंच और अकादमिक अखंडता के क्षेत्र में?

डॉ. विक्रम सिंह साहीः पहले शोधकर्ताओं को पिछले थीसिस या डिसर्टेशन देखने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों में यात्रा करनी पड़ती थी। अब डिजिटल रिपॉजिटरी से यह काम आसान हो गया है।

हमारी एक प्रमुख जिम्मेदारी प्लेजियरिज्म जांच है। जब हम थीसिस या रिसर्च पेपर के लिए प्लेजियरिज्म रिपोर्ट जारी करते हैं, तो यह मूलता की गारंटी के रूप में काम करती है। वर्षों बाद भी कोई उसके प्रामाणिकता पर सवाल नहीं उठा सकता। हम फैकल्टी को उन्नत शोध टूल्स की सीधी पहुंच प्रदान करके सशक्त बनाते हैं, जिससे मध्यस्थों पर निर्भरता कम होती है और सभी के लिए दक्षता बढ़ती है।

जेयू पोस्टः आपने पारंपरिक किताबों से आगे बढ़कर लाइब्रेरी में अनोखे स्थान बनाए हैं। क्या आप ऑरोबिंदो ज्ञान केंद्र और ऑरोबिंदो ध्यान केंद्र के बारे में बता सकते हैं?

डॉ. विक्रम सिंह साहीः लाइब्रेरी सिर्फ टेक्स्टबुक या परीक्षा तैयारी की जगह नहीं है—यह समग्र विकास की जगह है। हमने ऑरोबिंदो ज्ञान केंद्र बनाया है, जो श्री ऑरोबिंदो की दर्शन से प्रेरित किताबों, संदर्भ सामग्री, अभिलेखागार और डिजिटल संसाधनों का संग्रह है। इसके बगल में ऑरोबिंदो ध्यान केंद्र है, जो एक शांत ध्यान क्षेत्र है।

हम साहित्य पढ़ते हैं और जानकारी इकट्ठा करते हैं, लेकिन अंततः व्यक्ति को भीतर मुड़ना पड़ता है। वह आंतरिक यात्रा तभी संभव है जब आप शांत बैठकर खुद पर चिंतन करें—आप कौन हैं, कहां जा रहे हैं। लाइब्रेरी उस गहरी यात्रा का भी समर्थन करती है।

जेयू पोस्टः अंत में, युवाओं के लिए पढ़ाई और उसके प्रभाव के बारे में आपका क्या संदेश है?

डॉ. विक्रम सिंह साहीः यदि कोई एक अच्छी किताब ईमानदारी से पढ़ी जाए और उसका संदेश जीवन में लागू किया जाए, तो यह व्यक्ति की दृष्टि को पूरी तरह बदल सकती है।

मुझे गहराई से प्रभावित करने वाली किताबों में रामधारी सिंह 'दिनकर' की 'रश्मिरथी' और महात्मा गांधी के विचारों पर आधारित साहित्य शामिल है, खासकर सत्यनिष्ठा का सिद्धांत। सूचना के अतिरेक के युग में, सार्थक पढ़ाई के साथ गहन जुड़ाव शक्तिशाली बना हुआ है। यह चरित्र, दृष्टिकोण और उद्देश्य को आकार देता है।

जेयू पोस्टः इस विचारोत्तेजक बातचीत के लिए धन्यवाद। लाइब्रेरी को विकसित करते हुए उसकी शाश्वत सार को बनाए रखने के प्रति आपका जुनून वाकई प्रेरणादायक है।

डॉ. विक्रम सिंह साहीः धन्यवाद। धन्वंतरी लाइब्रेरी पूरे विश्वविद्यालय समुदाय—छात्रों, फैकल्टी, शोधकर्ताओं और उससे आगे—के लिए है। हम सभी को शारीरिक या वर्चुअल रूप से हमारे द्वारा पेश किए जाने वाले संसाधनों का अन्वेषण करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

पृष्ठ 1 का शेष

कल्चरल बोनान्जा ने रोशन

नहीं हैं; वे संभावनाओं को विस्तार देने के बारे में हैं।' 'रचनात्मकता किसी एक क्षेत्र की संपत्ति नहीं है। हमारा लक्ष्य प्रतिभा को पोषित करना, सहयोग को प्रोत्साहित करना और एक समावेशी वातावरण बनाना होना चाहिए जहां हर छात्र को अभिव्यक्त होने और विकसित होने की जगह मिले।' प्रो. राय ने छात्र-नेतृत्व वाली पहलों के प्रति विश्वविद्यालय प्रशासन की अटूट प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि की, जिसमें महत्वपूर्ण मूल्यांकन करते हुए उन्होंने कहा कि ये पहलें क्रिटिकल थिंकिंग को निखारने, शैक्षणिक तनाव कम करने और आत्मविश्वास जगाने में अत्यधिक मूल्यवान हैं। उन्होंने उत्साह की विरासत को विशेष श्रद्धांजलि दी, पूर्व संयोजक प्रो. सतनाम के नेतृत्व में बने मजबूत आधार की सराहना की और सभी क्लबों से उस गति को पुनः जीवंत करने का आह्वान किया। उन्होंने जोर दिया कि रचनात्मक स्वतंत्रता ही एक सच्चे जीवंत परिसर का जीवनरक्त है।

कुलपति ने वर्तमान उत्साह संयोजक प्रो. मीना शर्मा और समर्पित क्लब कोऑर्डिनेटर्स के प्रति हार्दिक सराहना भी व्यक्त की। उन्होंने टिप्पणी की, 'वे केवल कक्षा शिक्षक नहीं हैं; वे जुनून और दृष्टि के साथ सह-पाठ्यचर्या उत्कृष्टता के फलते-फूलते पारिस्थितिकी तंत्र का पोषण कर रहे हैं।' अपने स्वागत संबोधन में प्रो. मीना शर्मा ने उत्साह को छात्र नेतृत्व, आत्म-अभिव्यक्ति और सार्थक सामाजिक जुड़ाव को बढ़ावा देने वाले समर्पित मंच के रूप में सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने समझाया कि यह कंसोर्टियम छात्रों को शैक्षणिक क्षेत्र से आगे बढ़ने, छिपी प्रतिभाओं को खोजने, साहसिक विचारों को व्यक्त करने और समुदाय में सकारात्मक योगदान देने के लिए सशक्त बनाता है—जिससे भविष्य को आकार देने के लिए तैयार, संतुलित और आत्मविश्वासी व्यक्तियों की नींव रखी जाती है।

तीन दिवसीय इंडक्शन के पर्दे जोरदार तालियों और चमकते चेहरों के साथ गिरे, इस आयोजन ने नए छात्रों पर अमिट छाप छोड़ीः जम्मू विश्वविद्यालय मात्र एक शैक्षणिक संस्थान नहीं है, बल्कि एक जीवंत, सांस लेने वाला स्थान है जहां बुद्धि कल्पना से मिलती है, परंपरा नवाचार के साथ घुलमिल जाती है, और हर छात्र को चमकने का मंच मिलता है। उत्साह के नेतृत्व में परिसर विकास, जुड़ाव और उत्सव के अनंत अवसरों का वादा करता है—जो आने वाली रोमांचक शैक्षणिक यात्रा के लिए स्वर सेट कर रहा है।

जम्मू विश्वविद्यालय ने देशभक्ति के

बुनियादी ढांचे का विकास भी तेजी से हो रहा है, जिसमें 41 परियोजनाओं के लिए ₹35.23 करोड़ स्वीकृत किए गए हैं। इनमें आगामी इनोवेशन टावर, पत्रकारिता विभाग के लिए समर्पित भवन, आधुनिक शूटिंग रेंज, नया सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट, ष्ट-टाइप स्टाफ क्वार्टर्स, स्मार्ट क्लासरूम और अत्याधुनिक मुख्य द्वार शामिल हैं—जो शिक्षा और परिसर जीवन दोनों को बेहतर बना रहे हैं।

जम्मू के आकाश में तिरंगा गर्व से लहराते हुए, ये उत्सव एक शक्तिशाली याद दिलाते हैं कि सच्ची स्वतंत्रता निरंतर प्रगति, ज्ञान सृजन और विकसित भारत की ओर सामूहिक संकल्प के माध्यम से ही फलती-फूलती है। जम्मू विश्वविद्यालय उस यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार खड़ा है।

स्वतंत्रता की ओर मुफ्त

खुशियां—एक किताब, दोस्तों के साथ चाय। सुविधा से परे, यह पहल पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद है। हर इलेक्ट्रिक बस प्रदूषण कम करती है, जिससे शहर की हवा साफ और सड़कें शांत हो रही हैं।

जगती से नागरोटा और पंजग्राइये तक, महिलाएं अब कम डर और ज्यादा आजादी के साथ यात्रा कर रही हैं। माता-पिता की चिंता कम हुई है। बेटियां अब कंधे सीधे करके चलती हैं।

'अब मैं हल्की महसूस करती हूं—न सिर्फ जेब में, बल्कि दिल में भी,' छात्रा कहती हैं।

जैसे-जैसे जम्मू सड़कों और इमारतों में फैल रहा है, उसकी असली प्रगति चुपचाप हो रही है—इलेक्ट्रिक पहियों पर—एक-एक यात्रा में सम्मान, सशक्तिकरण और बदलाव को साथ लेकर।

महाद्वीपों को जोड़ते हुए: पत्रकारिता विभाग ने भारत और तंजानिया के मीडिया समानताओं पर ज्ञानवर्धक व्याख्यान आयोजित किया

रिज़वान/ नियति

जम्मू: वैश्विक मीडिया साक्षरता की दिशा में एक समृद्ध कदम उठाते हुए, जम्मू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विभाग ने पूर्वी अफ्रीका से एक अंतरराष्ट्रीय वक्ता को आमंत्रित कर ÷तंजानिया और भारत में मीडिया की तुलनात्मक विश्लेषण÷ विषय पर विचारोत्तेजक अतिथि व्याख्यान आयोजित किया।

यह सत्र विभागाध्यक्ष प्रो. गरिमा गुप्ता के पर्यवेक्षण में और प्रो. दुष्यंत कुमार राय के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ। मुख्य वक्ता के रूप में तंजानिया के डोडोमा विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ. एंजेल कासोंटा उपस्थित थीं। नौ वर्ष से अधिक की शिक्षण अनुभव के साथ-साथ तंजानियाई सरकार में उतने ही समय तक संचार अधिकारी के रूप में कार्य करने का अनुभव रखने वाली डॉ. कासोंता ने जम्मू परिसर में शैक्षणिक अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक विशेषज्ञता का दुर्लभ मिश्रण प्रस्तुत किया।

उनकी प्रस्तुति में दोनों विविध राष्ट्रों के मीडिया परिदृश्यों की बारीकी से तुलना की गई। मुख्य विषयों में प्रेस स्वतंत्रता, मीडिया नैतिकता, डिजिटल परिवर्तन और लोकतांत्रिक संवाद को बढ़ावा देने में पत्रकारिता की महत्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक भूमिका शामिल थी। ऐतिहासिक पथ, सांस्कृतिक संरचना और शासन व्यवस्था में गहरे अंतर के बावजूद, डॉ. कासोंटा ने आश्चर्यजनक समानताओं पर प्रकाश डाला: दोनों देश पत्रकारिता की स्वतंत्रता की रक्षा, तेज बदलाव के बीच नैतिक मानकों को बनाए रखने और डिजिटल प्लेटफॉर्मों की विघटनकारी शक्ति से निपटने की चुनौतियों से जूझ रहे हैं।

उन्होंने कहा, ÷हालांकि हमारे संदर्भ अलग-अलग हैं, लेकिन जिम्मेदार रिपोर्टिंग, मीडिया स्वायत्तता और तकनीकी बदलावों के अनुकूलन की मूल चुनौतियां सीमाओं के पार मीडिया कर्ताओं को एकजुट करती हैं।÷

छात्रों को अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण से परिचित कराने की विभाग की निरंतर पहल इस पूरे सत्र में स्पष्ट दिखाई दी। नियमित रूप से ऐसे आयोजन छात्रों के क्षितिज को विस्तार देने के प्रयासों में से एक हैं, जो दर्शाते हैं कि मीडिया विभिन्न वैश्विक संदर्भों में शासन, समाज और नागरिकों के बीच महत्वपूर्ण पुल का काम करता है।

डॉ. परदीप बाली ने गर्मजोशी भरे स्वागत संबोधन के साथ सत्र की शुरुआत की और आधुनिक मीडिया शिक्षा में अंतर-सांस्कृतिक संवाद के बढ़ते महत्व पर जोर दिया। उन्होंने विभाग की अंतरराष्ट्रीय सहयोग और विचारों के मुक्त प्रवाह के लिए मंच बनाने की प्रतिबद्धता की सराहना की।

ऑडिटोरियम छात्रों की सक्रिय भागीदारी से गूंज उठा। उन्होंने प्रश्नोत्तर सत्र में उत्सुकता से भाग लिया और तंजानियाई तथा भारतीय पत्रकारिता की साझा दुविधाओं तथा अनोखे समाधानों पर गहराई से सवाल किए। डॉ. रविया गुप्ता, डॉ. कुमरजीत चजगोत्रा सहित फैकल्टी सदस्य उपस्थित थे, जबकि डॉ. रामियान भारद्वाज ने कुशलतापूर्वक कार्यक्रम संचालन किया।

सत्र के समापन पर डॉ. रविया गुप्ता ने भावपूर्ण धन्यवाद ज्ञापित किया और डॉ. कासोंटा को उनके ज्ञानवर्धक योगदान के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने सहकर्मी फैकल्टी के सहयोगी भावना और छात्रों की जीवंत भागीदारी की भी सराहना की, तथा कहा कि ऐसे आयोजन शैक्षणिक वातावरण को नई ऊर्जा प्रदान करते हैं और आकांक्षी पत्रकारों में सच्चे वैश्विक दृष्टिकोण का विकास करते हैं।

जम्मू विश्वविद्यालय के सीडीओई ने 'एक पेड़ माँ के नाम' वृक्षारोपण अभियान से हरित आंदोलन को दी चिंगारी

रामनीक/इसरन

जम्मू: प्रकृति और मातृत्व दोनों के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि में, जम्मू विश्वविद्यालय के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (सीडीओई) ने परिसर के एक कोने को पर्यावरणीय प्रतिबद्धता के जीवंत प्रतीक में बदल दिया—एक उत्साहपूर्ण वृक्षारोपण अभियान के माध्यम से।

यह कार्यक्रम शांतिपूर्ण सिट्रस वाटिका में आयोजित हुआ, जहां गणमान्य व्यक्ति, शिक्षक, कर्मचारी और उत्साही एनएसएस स्वयंसेवक एक साथ आए और नींबू वर्ग के पौधे रोपित किए—प्रत्येक पौधा हरे-भरे, स्वस्थ कल के लिए एक छोटा लेकिन सार्थक कदम। यह अभियान महज एक पर्यावरण गतिविधि नहीं था; यह मानवता और पृथ्वी के बीच के बंधन की सामूहिक पुनः पुष्टि थी, जो माननीय प्रधानमंत्री के मार्मिक अभियान ÷एक पेड़ माँ के नाम÷ से प्रेरित था।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. नीरज शर्मा; सीडीसी निदेशक प्रो. राजीव रत्तन; तथा सांख्यिकी विभागाध्यक्ष प्रो. जे.पी. सिंह जुरेल द्वारा संयुक्त रूप से उद्घाटित इस समारोह की शुरुआत प्रतीकात्मक रूप से हुई, जब नेताओं ने तीन अलग-अलग नींबू के पौधे रोपित किए। उनके इस कार्य ने प्रेरणादायक स्वर स्थापित किया और एनएसएस स्वयंसेवकों को प्रकृति से पुनः जुड़ने तथा भावी पीढ़ियों के लिए इसका पोषण करने का आह्वान किया। सीडीओई के निदेशक प्रो. पंकज के. श्रीवास्तव ने अतिथियों और स्वयंसेवकों का गर्मजोशी से स्वागत किया। अपने संबोधन में उन्होंने 'एक पेड़ माँ के नाम÷ पहल की भावनात्मक गहराई पर प्रकाश डाला और प्रतिभागियों को प्रत्येक रोपित पेड़ को अपनी माँ या किसी प्रिय मातृस्वरूप को समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा, 'यह साधारण कार्य संरक्षण से गहरा व्यक्तिगत जुड़ाव पैदा करता है,' जिससे पर्यावरणीय कार्रवाई प्रेम और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति बन जाती है।

प्रो. श्रीवास्तव ने विश्वविद्यालय की समर्पित आर्बोरिकल्चर टीम की भी सराहना की, विशेष रूप से संयोजक प्रो. पयूष मलाविया और आर्बोरिकल्चरिस्ट श्री अजमेर सिंह को, जिनके अथक प्रयास परिसर के हरित आवरण को संरक्षित और समृद्ध करने में महत्वपूर्ण हैं। उनकी निरंतर कोशिशों से हर पौधे को फलने-फूलने का सर्वोत्तम अवसर मिलता है।

क्षेत्र से प्रत्यक्ष पाठ: कुंदन सिंह ने मीडिया छात्रों को प्रसारण पत्रकारिता की कच्ची कहानियों से प्रेरित किया

रिज़िन/ प्रीतिका

जम्मू: जम्मू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विभाग ने नई दिल्ली के अनुभवी वरिष्ठ पत्रकार कुंदन सिंह के माध्यम से छात्रों तक प्रसारण पत्रकारिता की द्वह्न्भ्ठ्ठह्नह्यद्वठ्ठद्र की सच्ची धड़कन पहुंचाई। यह एक रोचक इंटरैक्टिव सत्र के रूप में आयोजित हुआ, जिसमें कुंदन सिंह ने अपने गहन प्रसारण मीडिया अनुभव साझा किए।

प्रो. दुष्यंत कुमार राय के गतिशील नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में मीडिया छात्रों की उत्सुक भीड़ जमा हुई, साथ ही फैकल्टी सदस्य डॉ. परदीप सिंह बाली और डॉ. रविया गुप्ता भी उपस्थित रहे। यह सत्र लचीलापन, नैतिकता और मैदान से रिपोर्टिंग की बिना फिल्टर वाली वास्तविकताओं पर एक मास्टरक्लास में बदल गया।

जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमेश राय ने इस तरह के उद्योग के अनुभवी लोगों से सीधे संवाद को ÷अमूल्य÷ बताते हुए मजबूत समर्थन दिया। उन्होंने जोर दिया कि ऐसे इंटरैक्शन न केवल उभरते पत्रकारों को प्रेरित करते हैं, बल्कि उन्हें तेजी से बदलते और उच्च दांव वाले मीडिया परिदृश्य में सत्य को बनाए रखने के लिए आवश्यक व्यावहारिक ज्ञान और कौशल भी प्रदान करते हैं।

प्रो. दुष्यंत कुमार राय ने कुंदन सिंह का गर्मजोशी से स्वागत किया और प्रसारण पत्रकारिता में उनके उत्कृष्ट योगदान तथा दशकों के बहुआयामी अनुभव—उच्च दबाव वाली न्यूज़रूम से लेकर मीडिया पारिस्थितिकी तंत्र में विविध भूमिकाओं—को साझा करने की उनकी

उदारता की सराहना की।

कुंदन सिंह ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया जब उन्होंने अपने करियर के रोमांचक अध्याय सुनाए—क्षेत्रीय रिपोर्टर और कैमरामैन के रूप में शुरुआत से लेकर प्राकृतिक आपदाओं की अफरा-तफरी में फंस जाना। उन्होंने विनाशकारी बाढ़ और अन्य आपात स्थितियों को कवर करने के अनुभवों का जीवंत वर्णन किया, जिसमें पत्रकारों, एंकरों और कैमरा टीमों पर पड़ने वाले शारीरिक एवं भावनात्मक दबाव की कठोर तस्वीर उकेरी। उन्होंने बताया कि अथक दबाव के बीच भी मिशन不变 रहता है: दुनिया तक मैदान की बिना किसी मिलावट वाली हकीकत को पहुंचाना।

सत्र का मुख्य आकर्षण इसकी जीवंत, दोतरफा बातचीत थी। छात्रों ने उत्साह से सवाल दागे—लाइव रिपोर्टिंग का एड्रेनालिन, न्यूज़रूम की जटिल कार्यप्रणाली, पत्रकारों द्वारा रोजाना पार किए जाने वाले नैतिक संतुलन, और कच्चे फुटेज को प्रभावशाली कहानियों में बदलने वाली टीमवर्क के बारे में। कुंदन के जवाब स्पष्ट और जमीन से जुड़े थे, जिसमें उन्होंने आकांक्षी रिपोर्टरों को हर असाइनमेंट को विनम्रता, साहस और तथ्यों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के साथ अपनाने की सलाह दी।

मुख्य संदेश गहराई से गूंजा: पत्रकारिता में तकनीकी कौशल से कहीं अधिक जरूरी है—प्रतिकूल परिस्थितियों में सत्य की खोज के लिए नैतिक दृढ़ता, जिम्मेदारी से कहानियां सुनाने के लिए सहयोग, और तथ्यों को बिना विकृति के बोलने देने के लिए सहानुभूति।

छात्र प्रेरणा से भरे हुए बाहर निकले और सत्र को ÷प्रेरणादायक÷ तथा ÷व्यावहारिक रूप से समृद्ध÷ बताया। कई ने कहा कि इसने उनकी सोच को नया आयाम दिया—विषयों को विनम्रता के नजरिए से देखने और महत्वपूर्ण नैतिक कथाओं को गढ़ने की प्रेरणा मिली।

डॉ. रविया गुप्ता के हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र समाप्त हुआ, लेकिन कमरे में नई ऊर्जा और उद्देश्य की स्पष्ट अनुभूति बनी रही। ऐसे आयोजन विभाग के मिशन को पुनः स्थापित करते हैं: केवल कुशल संचारक नहीं, बल्कि सिद्धांतवादी कहानीकार तैयार करना, जो बदलते मीडिया जगत में लोकतंत्र की सेवा अखंडता के साथ करें।

जम्मू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन के छात्रों के लिए यह महज एक व्याख्यान नहीं था—यह तूफान के बीच भी कहानी का पीछा करने का जीवंत खाका था।

एआई, नैतिकता और बदलते न्यूज़रूम : जेयू के मीडिया छात्रों को वयोवृद्ध नेहा पुष्करना ने दी भविष्योन्मुखी मास्टरक्लास

नेहा/ कशिश

जम्मू: जम्मू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विभाग ने अपने कक्षा को कल के न्यूज़रूम की खिड़की में बदल दिया, जब यहां ÷भारतीय मीडिया का भविष्य: उभरती प्रवृत्तियां और प्रौद्योगिकियां÷ शीर्षक से एक प्रेरणादायक अतिथि व्याख्यान आयोजित किया गया।

मुख्य वक्ता रहीं नेहा पुष्करना, पूर्व मेट्रो एडिटर, हिंदुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली–जिनके पास लिगेसी और डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर दो दशकों से अधिक का उच्च प्रभाव वाला अनुभव है। विभागाध्यक्ष प्रो. गरिमा गुप्ता और प्रो. दुष्यंत कुमार राय के मार्गदर्शन में आयोजित इस सत्र में फैकल्टी सदस्य–डॉ. कुमरजीत चजगोत्रा, डॉ. रविया गुप्ता, डॉ. रामियान भारद्वाज और डॉ. परदीप बाली–के साथ-साथ मीडिया के छात्रों की उत्सुक भीड़ जमा हुई, जो उद्योग के अगले अध्याय को समझने के लिए बेताब थे।

प्रो. दुष्यंत कुमार राय ने कार्यक्रम की शुरुआत गर्मजोशी भरे स्वागत से की और नेहा पुष्करना की विशाल विशेषज्ञता साझा करने की उदारता की सराहना की। इसके बाद

डॉ. रविया गुप्ता ने वक्ता का परिचय दिया, जिसमें द टाइम्स ऑफ इंडिया और हिंदुस्तान टाइम्स जैसे प्रतिष्ठित नामों के साथ उनके शानदार सफर, साथ ही न्यूज़ राइटिंग, न्यू मीडिया, ब्लॉगिंग, बिजनेस पत्रकारिता और कंटेंट स्ट्रैटेजी में उनकी महारत को उजागर किया गया।

नेहा पुष्करना ने मंच संभाला और तुरंत सबका ध्यान खींच लिया। उन्होंने भारतीय मीडिया के वर्तमान और निकट भविष्य की स्पष्ट, संतुलित तस्वीर पेश की: प्रिंट की स्थिर प्रासंगिकता बरकरार है, जबकि डिजिटल तेजी से आगे बढ़ रहा है; प्रौद्योगिकी की अथक विघटनकारी गति; और सबसे महत्वपूर्ण–कंटेंट क्रिएशन, ऑडियंस टारगेटिंग, फैक्ट-चेकिंग ऑटोमेशन और व्यक्तिगत समाचार वितरण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बढ़ती केंद्रीयता।

फिर भी उनका संदेश एक मजबूत आधार पर टिका था: कोई भी एल्गोरिदम महान पत्रकारिता की नींव को नहीं बदल सकता। उन्होंने छात्रों से आग्रह किया कि वे कालातीत कौशलों–मजबूत, स्पष्ट लेखन, अटूट जुनून, सख्त निष्पक्षता, कठोर तथ्य-सत्यापन और नैतिक कहानी कहने–की रक्षा और निखार करें, चाहे उपकरण कितने भी उन्नत क्यों न हों।

उन्होंने जोर देकर कहा, 'प्रौद्योगिकी यह बदल सकती है कि हम कहानियां कैसे सुनाते हैं, लेकिन यह कभी नहीं बदल सकती कि हम कहानियां क्यों सुनाते हैं।'

व्याख्यान सहज रूप से जीवंत इंटरैक्टिव प्रश्नोत्तर में बदल गया। छात्रों ने विचारशील सवाल पूछे–डिजिटल-फर्स्ट न्यूज़रूम में जीवित रहने और सफल होने के बारे में, एआई-चालित पत्रकारिता के अवसरों और खतरों के बारे में, सोशल मीडिया के सार्वजनिक विमर्श पर प्रभाव के बारे में, और त्वरित समाचार चक्र के युग में गति और सटीकता के बीच संतुलन कैसे बनाए रखें। नेहा ने स्पष्टता और व्यावहारिकता के साथ जवाब दिए, वास्तविक दुनिया के किस्से और कारगर सलाह साझा कीं, जो कक्षा सिद्धांत को न्यूज़रूम की हकीकत से जोड़ती थीं।

छात्रों की प्रतिक्रिया बिजली-सी थी। कई ने सत्र को 'प्रेरणादायक', 'आंखें खोलने वाला' और 'व्यावहारिक रूप से समृद्ध' बताया। कई ने कहा कि वक्ता की अंतर्दृष्टि ने उनके पेशे के प्रति प्रतिबद्धता को नई ऊर्जा दी है, उन्हें एआई जैसे उभरते उपकरणों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया है, लेकिन साथ ही विश्वसनीय पत्रकारिता को परिभाषित करने वाले मूल्यों पर अडिग रहने की याद दिलाई है।

डॉ. परदीप बाली ने हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया, जिसने दिन की सीख और आगे बढ़ने की भावना को समेट लिया। डॉ. कुमरजीत चजगोत्रा ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

जम्मू विश्वविद्यालय के मीडिया छात्रों के लिए यह व्याख्यान महज एक शैक्षणिक अभ्यास नहीं था–यह एक समय पर याद दिलाने वाला संदेश था कि भारत के सूचना भविष्य को आकार देने वाले वे पत्रकार होंगे, जो आज की अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों में महारत हासिल करेंगे और कल भी मायने रखने वाले शाश्वत नैतिक सिद्धांतों पर अटल रहेंगे।

डिस्प्ले योर टैलेंट-2025 शानदार समापन पर: तीन दिनों की रचनात्मकता, प्रतिस्पर्धा और सांस्कृतिक उत्सव का भव्य समापन

गुरलीन/ ज्योति

जम्मू: तीन अविस्मरणीय दिनों तक जम्मू विश्वविद्यालय का तावी जोन युवा कल्पना, लय, वाद-विवाद और दृश्य कथाकथन का धड़कता हुआ कैनवास बन गया। 8 नवंबर को डिस्प्ले योर टैलेंट 2025 का शानदार समापन हुआ। कुलपति प्रो. उमेश राय के दूरदर्शी मार्गदर्शन में आयोजित यह प्रमुख सांस्कृतिक महाकुंभ एक बार फिर विश्वविद्यालय के कैलेंडर का महत्वपूर्ण हिस्सा साबित हुआ–इसने संबद्ध कॉलेजों, शिक्षण विभागों और ऑफसाइट कैंपसों के छात्रों को अपनी कलात्मक प्रतिभा दिखाने, जुड़ने और उत्सव मनाने का जीवंत मंच प्रदान किया।

अंतिम दिन उच्च ऊर्जा वाली प्रतियोगिताओं से फूट पड़ा, जिसमें शास्त्रीय नृत्य की सुंदरता से लेकर तीक्ष्ण बुद्धि वाले वाद-विवाद और प्रभावशाली दृश्य टिप्पणियां तक सब कुछ शामिल था। छह विविध श्रेणियों में विजेता उभरे, प्रत्येक प्रस्तुति और रचना जम्मू की युवा पीढ़ी में फल-फूल रही प्रतिभा, आत्मविश्वास और सांस्कृतिक गर्व का प्रमाण थी।

समापन समारोह का चरमोत्कर्ष पारेड ग्राउंड, जम्मू के गवर्नमेंट कॉलेज फॉर वुमेन के खचाखच भरे ऑडिटोरियम में हुआ। प्रतिभागी, मेंटर्स और अतिथि गर्व, तालियों और भावुकता से भरे माहौल में इकट्ठा हुए ताकि उत्सव के सर्वश्रेष्ठ सितारों को सम्मानित किया जा सके।

प्राचार्य के गर्मजोशी भरे स्वागत और डॉ. रविंदर टिकू तथा डॉ. सीमा मलपोत्रा द्वारा प्रस्तुत विस्तृत कार्यक्रम रिपोर्ट के बाद मंच पर मुख्य अतिथि के रूप में अनुसंधान अध्ययन की डीन प्रो. नीलू रोहमेत्रा आईं। इस कॉलेज की पूर्व छात्रा होने के नाते उन्होंने अपनी जड़ों को भावुकता से याद किया और संस्थान की प्रगति तथा समग्र शिक्षा में सांस्कृतिक जुड़ाव की अपरिहार्य भूमिका की सराहना की। उन्होंने कहा, ÷यहां के शिक्षक सिर्फ ज्ञान नहीं देते–वे पूर्ण मानव बनाते हैं।÷

पद्म श्री राजेंद्र टिकू, सम्मानित अतिथि, ने इस पहल की प्रशंसा की कि यह युवाओं में प्रामाणिक कलात्मक प्रतिभा को उजागर करती है और अनुशासन, कल्पना तथा सांस्कृतिक पहचान को स्थापित करती है। छात्र कल्याण के डीन प्रो. प्रकाश अंतहाल ने भी निर्बाध सहयोग की सराहना की जिसने आयोजन की सफलता को संभव बनाया।

अंतिम दिन की प्रमुख परिणाम :

- शास्त्रीय नृत्य (सोलो): अजय अग्रवाल (IMFA) प्रथम, अक्षिता लंबा (IMFA) द्वितीय और नीलाक्षी आनंद (GCW Parade Ground) तृतीय। निर्णायक: सुश्री नितिका अग्रवाल और डॉ. हितिन खुराना।

- क्रिएटिव कोरियोग्राफी: GCW Parade Ground, जम्मू प्रथम, चट्ट लॉ कॉलेज द्वितीय। निर्णायक: सुश्री नितिका अग्रवाल, डॉ. हितिन खुराना और श्री सतीश चंदर।

- ग्रुप फोक डांस: GCW Parade Ground प्रथम, विभाग ऑफ लॉ द्वितीय और सेंटर फॉर डिस्टेंस एंड ऑनलाइन एजुकेशन तृतीय। वही प्रतिष्ठित निर्णायक पैनल।

- वाद-विवाद ('सोशल मीडिया जागरूकता में अधिक योगदान देता है या व्याकुलता में'): सेंटर फॉर डिस्टेंस एंड ऑनलाइन लर्निंग (छ्ब) विजेता, GCW Parade Ground द्वितीय और द लॉ स्कूल, छ्ब तृतीय। निर्णायक: डॉ. एकता गुप्ता, डॉ. रेविका अरोड़ा और डॉ. बिंदु चिब।

- कार्टूनिंग ('स्वच्छ भारत और गलत पार्किंग'): सहरीन (GDC Paloura) स्वर्ण, तनिष कुमारी (GDC R.S. Pura) रजत और सच्चन देव (IMFA) कांस्य। निर्णायक: श्री चंदर शेखर, श्री विकास खजूरिया और श्री योगेश मनहास।

- पोस्टर मेकिंग ('विकसित भारत और ऑपरेशन सिंदूर'): रूपिंदर सिंह (GDC R.S. Pura) प्रथम, वंशिका राजपूत (CDOE) द्वितीय और अबुजर अली (IMFA) तृतीय। निर्णायक पैनल: कार्टूनिंग जैसा ही।

गर्व, जुनून और खेल : कुलपति ने जेयू क्रिकेट टीम को प्रतिष्ठित अखिल भारतीय कुलपतियों के टी20 टूर्नामेंट के लिए रवाना किया

राजेश/मुख्तार

जम्मू: संस्थागत गर्व और खेल भावना से भरे एक भावुक पल में, जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमेश राय ने 5 नवंबर को विश्वविद्यालय की क्रिकेट टीम को औपचारिक रूप से झंडी दिखाकर रवाना किया, ताकि वे 21वें अखिल भारतीय कुलपतियों के क्रिकेट टी20 टूर्नामेंट में जेयू का प्रतिनिधित्व करें।

यह उच्च-ऊर्जा वाला राष्ट्रीय आयोजन 6 से 15 नवंबर 2025 तक हरियाणा के हिसार में लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (LUVAS) में आयोजित होगा। जेयू की टीम सहायक स्टाफ के साथ 4 से 16 नवंबर तक यात्रा पर रहेगी, जिसमें यात्रा के दिन भी शामिल हैं।

टीम का नेतृत्व आत्मविश्वास और अनुभव के साथ राज कुमार बख्शी कर रहे हैं, जो कप्तान और कोच दोनों की भूमिका निभा रहे हैं। उप-कप्तान के रूप में निरंजन सिंह उनका साथ दे रहे हैं। टीम का प्रबंधन मोहित शर्मा (मैनेजर) और कमल नैन (सहायक मैनेजर) कुशलतापूर्वक संभाल रहे हैं, जो मैदान पर रणनीति से लेकर मैदान के बाहर की लॉजिस्टिक्स तक हर विवरण को सटीकता से देख रहे हैं।

प्रस्थान से पहले खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए प्रो. राय ने प्रेरणादायक शब्द कहे जो परिसर के मैदान से कहीं आगे गूंजे। उन्होंने कहा, 'हर मैच को दृढ़ संकल्प, अनुशासन और खेल भावना के सच्चे उत्साह के साथ खेलें।' 'आप सिर्फ अपनी बल्लेबाजी और गेंदबाजी नहीं ले जा रहे, बल्कि राष्ट्रीय मंच पर जम्मू विश्वविद्यालय का नाम और प्रतिष्ठा भी साथ ले जा रहे हैं।' उन्होंने युवा खिलाड़ियों को याद दिलाया कि ये टूर्नामेंट महज प्रतियोगिता से कहीं अधिक हैं–ये अटूट टीमवर्क गढ़ते हैं, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को जन्म देते हैं और संस्थागत गर्व को गहराई से स्थापित करते हैं।

टीम के रवाना होने पर तालियों की गड़गड़ाहट और लहराते झंडों के बीच माहौल उत्साह और एकजुटता से भर गया। इन खिलाड़ियों के लिए हिसार में होने वाला यह टूर्नामेंट महज टी20 क्रिकेट नहीं है–यह अपनी प्रतिभा, दृढ़ता और जेयू को परिभाषित करने वाले मूल्यों को प्रदर्शित करने का अवसर है: मैदान पर अनुशासन, मैदान के बाहर सौहार्द और विश्वविद्यालय के रंग पहनने का अटूट गर्व।

संपादकीय मंडल:
मुख्य संपादक: प्रो. गरिमा गुप्ता, प्रबन्धक संपादक: प्रो. दुश्यन्त कुमार राय, समाचार संपादक: रामायण भाद्रवाज,
वरिष्ठ सहायक संपादक: शुभम चौधरी, प्रितिका सहायक संपादक: संचित, अभय